किशोर बालक बालिकाओं में नैतिक विकास का तुलनात्मक अध्ययन

* रेनूबाला शर्मा **आभा तिवारी *** डॉ. सुधा जैन

नैतिक विकास के बारे में यह प्रश्न उठाना कि मानव समाज को अपने व्यवहार में नीति का अनुशीलन और उसका शास्त्रीय विवेचन कब कैसे और कहाँ आरंभ किया, असंगत और अप्रसांगिक ही होगा । वस्तुतः देखा जाए तो शास्त्रीय विवेचना के बहुत पूर्व ही मानव समाज में नैतिक चिन्तन व्यवहार क्षेत्र में स्थापित हो गया था । जॉन लॉक की यह उक्ति "ईश्वर ने मनुष्य को केवल द्विपाद प्राणी नहीं बनाया और उसे विचारशील बनाने का ठेका या भार अरस्तु पर छोड़ दिया ।" जिस तरह मनुष्य को स्वाभाविक रूप से तर्कशास्त्र के जन्मदाता अरस्तु ने उसे विचार करना सिखलाया, उसी प्रकार मानव स्वभावतः नैतिक प्राणी है न कि नीति शास्त्रियों ने उसे नैतिक बनाया । मानव, सभ्यता के आदिकाल से ही अपने आप को किसी न किसी नैतिक नियम में अनुशासनबद्ध करता चला आया है । नैतिक मूल्य हमारी संस्कार चेतना है, जो हमें पुरखो से विरासत के रूप में मिलती है, उसे हम तेजस व श्रेष्ठ बनाकर आने वाली पीढ़ी को धरोहर के रूप में सौंपते हैं ।

चूंकि आज हमारा किशोर वर्ग आपा–धापी एवं पाश्चात्य संस्कृति के बीच अपनी नैतिक धरोहर को विस्मृत करता चला जा रहा है, अतः उसे नये मूल्यों को निर्माण हेतु संकल्पशील बनाने के दिशा में, प्रयास किया जाना जरूरी है । मूल्य एवं संस्कार प्राचीन परम्पराओं से जुड़े हैं, अतः इनका न तो खण्डन हो न उन्मूलन। व्यक्तित्व को समग्र स्वरूप का निर्माण गुणों की सम्मिलित पृष्ठभूमि से निर्धारित होता है। शीलगुण ऐसे गत्यात्मक संगठन होते है जिसके कारण व्यक्ति का व्यवहार और उसके विचार किसी भी वातावरण में अपने ढंग की विशिष्टता को प्रगट करते हैं।

किशोर मनोविज्ञान एक नव विकसित वैज्ञानिक शाखा है। अधिकांश माता–पिता अपने बच्चों में एक विशेष प्रकार का गुण देखना चाहते हैं। उपयुक्त गुणों के निर्माण हेतु कई प्रकार के उपागम अपनाते हैं। तथापि बालकों में नकारात्मक नैतिक मूल्य एवं आक्रामक व्यवहार परिलक्षित होता है। संभवतः बालकों में यह व्यवहार परोक्षरूप से प्रभावित करने वाले कारक टी.व्ही., कम्प्यूटर, भ्रामक विज्ञापन, पत्र–पत्रिकायें हैं, जो नैतिकता के पतन के विषय में अनुपयोगी शिक्षा प्रदान करती है। बी.एम. बर्जर एवं जे.डब्ल्यू किंच (1965) ने अपने अध्ययन में देखा कि बालक की अभिव्यक्तियों एवं मूल्यों व व्यवहार में परिवार की अपेक्षा मित्र मण्डली अधिक प्रभाव डालती है। मन एवं जेन्ना (1988) में अपने अध्ययन में पाया कि बच्चों में नैतिकता के विषय में उनके माता–पिता एवं शिक्षक के मूल्यों का प्रभाव पड़ता है । शोलापुरकर (1987) ने नैतिक विकास के अन्तर्गत लिंग भेद का अध्ययन किया। पोवैल एवं सहयोगियों (1995) ने अपने अध्ययन से यह तथ्य प्रकाश में लाया कि अभिभावक एवं बालकों में बिगाड़ उस समय चरमसीमा में होता है जब किशोरों की आयु 13–15 वर्ष की होती है। इन्हीं अनुसंधान कार्यो को ध्यान में रखते हुये प्रस्तुत शोध कार्य में बालक बालिकाओं में नैतिक विकास का तुलनात्मक अध्ययन करने का विचार किया गया। प्राप्त परिणामों के आधार पर नैतिकशील अवगुणों को कम करने एवं शील गुणों को विकसित करने के सुझाव दिये जा सकते है।

उद्देश्य 1. किशोर बालक–बालिकाओं के नैतिक विकास में आयु के प्रभाव का अध्ययन करना। 2.किशोर बालक–बालिकाओं के नैतिक विकास में लिंग के प्रभाव का अध्ययन करना

परिकल्पना–1. विभिन्न आयु के बच्चों में नैतिक मूल्यों के ज्ञान की मात्रा में विभिन्नता पाई जायेगी। 2. लड़के व लड़कियों के नैतिक मूल्यों के ज्ञान के प्रारूप में अन्तर पाया जायेगा ।

प्रतिदर्श –

शाला	बालक	बालिकायें	कुल
नवोदय विद्यालय	75	75	150
केन्द्रीय विद्यालय	75	75	150
कुल योग –	150	150	300

परीक्षण –डॉ. मीरा वर्मा एवं डॉ. दुर्गानंद सिन्हा के नैतिक निर्णय परीक्षण संबंधी मापनी ।

विधि –प्रस्तुत अध्ययन में नवोदय विद्यालय एवं केन्द्रीय विद्यालय के बालक–बालिकाओं के नैतिक मूल्यों का अध्ययन करना है । अतः निम्नानुसार अनुसंधान कार्य किया गया – 300 विद्यार्थियो का प्रतिशत लिया गया जो दो प्रकार के विद्यालयों से लिया गया। इसमें 150 नवोदय विद्यालय तथा 150 केन्द्रीय विद्यालय के बालक–बालिकाएं लिये गये। नवोदय

* शा. स्ना. उत्कृष्ठता महाविद्यालय, सागर,
**शा. एम.एच. गृहविज्ञान महाविद्यालय, जबलपुर
***अतिथि व्याख्याता, सागर,

हिन्दी माध्यम आवासीय विद्यालय तथा केन्द्रीय अंग्रेजी माध्यम गैर आवासीय विद्यालय के रूप में चुना गया। बालक–बालिकाओं का चयन संयोगिक आधार पर किया गया। इन बालक–बालिकाओं पर नैतिक निर्णय परीक्षण मापनी का प्रशासन किया गया। उत्तर कुंजियों के आधार पर प्रांप्ताकों को सारणीबद्ध किया गया। परिकल्पनाओं का सत्यापन तथा निष्कर्ष प्राप्त किये गये।

परिणामों का विश्लेषण –बच्चों में नैतिक मूल्यों के विकास पर किये गये अध्ययन से जो परिणाम प्राप्त हुये उनके आधार पर यह कहा जा सकता है कि बच्चों में नैतिकता के ज्ञान का विकास उनकी आयु बढ़ने के साथ–साथ होता है । अध्ययन से प्राप्त परिणामों का विश्लेषण तीन भागों के आधार पर किया गया। आयु के अनुसार नैतिक मूल्यों के प्रति अभिवषत्ति के स्तर में अन्तर –

सारणी क्रमांक – 1 – ए

आयु समूह	संख्या	मध्यमान	मनक विचलन	d f	SED	D	t
11-12 वर्श	100	17.2	7.86	98	1.12	2.7	2.4
13-14 वर्श	100	19.9	8.16				

सारणी क्रमांक – 1 – बी

आयु समूह	संख्या	मध्यमान	मनक विचलन	d f	SED	D	t
11-12 वर्श	100	17.2	7.86	98	1.11	8.35	7.5
15-16 वर्श	100	22.55	7.98				

लिंग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	d f	SED	D	t
बालिकायें	50	17.1	8.45	98	1.10	0.2	0.18
बालक	50	17.3	7.27				

सारणी क्रमांक – 2 – बी

आयु समूह – (13 – 14 वर्श)

लिंग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	d f	SED	D	t
बालिकायें	50	19.1	7.92	98	1.14	1.6	1.4
बालक	50	20.1	8.4				

सारणी क्रमांक – 2 – सी

आयु समूह – (15 – 16 वर्श)

लिंग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	d f	SED	D	t
बालिकायें	50	22.7	7.91	98	1.12	5.7	5.08
बालक	50	28.4	8.04				

उपरोक्त सारणी के अनुसार प्राप्त परिणामों के अन्तर्गत नैतिक मूल्यों के प्रति अभिवषत्ति के ज्ञान के सम्बन्ध में उच्च आयु समूह में मध्यमान 22.55 तथा प्राभाविक विचलन 7.98 , मध्य आयु में मध्यमान 19. 9 तथा प्राभाविक विचलन 8.16 तथा निम्न आयु समूह में मध्यमान 17.2 तथा प्राभाविक विचलन 7.86 प्राप्त हुये हैं । सर्वाधिक **t** मूल्य उच्च आयु तथा निम्न आयु समूह के मध्य 7.52 पाई गई तथा न्यून व मध्य आयु के समूह **t** मूल्य 2.4 पाया गया । अतः परिणामों से स्पश्ट होता है कि उच्च आयु समूह के बच्चें तुलनात्मक रूप से मध्य तथा निम्न आयु समूह के बच्चों से बेहतर पाये गये, जो यह स्पश्ट करता है कि आयु बढ़ने के साथ–साथ बच्चों में नैतिक मूल्यों के प्रति ज्ञान क्रमषः बढ़ता जाता है, यह मध्यमान के अन्तर द्वारा भी स्पश्ट होता है ।

नैतिक मूल्यों के प्रति अभिवषति पर लिंग का प्रभाव –

सारणी क्रमांक – 2 – ए

आयु समूह – (11 – 12 वर्श)

सरणी क्रमांक 2 – ए, 2 बी, 2 सी के आधार पर प्राप्त हुये परिणामों को नैतिक मूल्यों के ज्ञान के सम्बन्ध में तीन आयु स्तरों के बालक–बालिकाओं के आधार पर मापा गया । लिंग के आधार पर मध्यमान के सार्थक अन्तर को ज्ञात किया गया । 13–14 वर्श के आयु समूह के बालक–बालिकाओं में नैतिक ज्ञान के स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया । जबकि निम्न आयु समूह (11–12 वर्श) के बालक–बालिकाओं में सार्थक अन्तर पाया गया । अतः यह स्पश्ट होता है कि लिंग के आधार पर बालक–बालिकाओं में नैतिक निर्णय के ज्ञान का विकास उनकी आयु बढ़ने के साथ–साथ बढ़ता हुआ पाया गया ।

विवेचना –नैतिकता मनुश्य का अन्तर्निहित गुण होता है जिसे उसकी व्यक्तिगत पूंजी कहा जा सकता है । भले ही किसी व्यक्ति को नैतिक सिद्धांतों का किंचित मात्र भी ज्ञान न हो परन्तु वह अपनी दिनचर्या में इस प्रकार के निर्णय प्रतिदिन लेता है और नैतिक मूल्य का संरक्षण कर अपने व्यवहार को अग्रसर करता है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1- O Alvarez, A. (1988) Beyond the unpleasure principle, Journal of Child Psychology, 14(2), 1-13. 2- Barker, H.J. Child Development 3- Beanic (1980), School age social status and Participation in Social Activities. 4- Cattle. (1945), Principle trait Clusters for describing Personality. 5- Deo (1970), Personal Problems of Adolescents. M.Ed. Dissertation (Jaipur University Rajasthan) Journal of Human Stress, 8(2), 23-31.